Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

वर्तमान शिक्षा में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन

Karuna Kumari*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

----------X----------

प्रस्तावना:–

गौतम बुद्ध लोक जीवन की पीड़ा को देखकर उद्देलित हो उठे और उनके मन में भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रश्न उपस्थित होने लगे। इन प्रश्नों के उत्तर के अन्वेषण ने उन्हें गृह त्याग हेतु विवश किया। प्रश्नों का उत्तरान्वेषण मात्रा भौतिक संसाधनों का अन्वेषण न था वरन् आत्म–साक्षात्कार का अन्वेषण था। संसार की पीड़ा ने उनके हृदय की करूणा सागर को स्पन्दित कर दिया और उनके मुख से प्रस्पफुटित हुआ–सर्वम् दुःखम् और उन्होंने इस दुःख की निवृत्ति हेतु चार आर्य सत्यों की विवेचना की।

– दुःख

– दुःख समुदाय

– दुःख निरोध

– दुःख निरोधगामी प्रतिपद्

आर्य अष्टांगिक मार्ग बु(ने दुःख निवृत्ति को ही महत्वपूर्ण माना था, जिसके लिए उन्होंने अष्टांगिक मार्ग की कल्पना की थी, निर्वाण प्राप्त हेतु इनका पालन आवश्यक था। ये मार्ग निम्नवत् हैं–

सम्यक् दृष्टि– चारों आर्य सत्यों का सतत् ध्यान, जो निर्वाण की ओर ले जाता ळें

सम्यक् संकल्प– दूसरों के लिए प्रतिकूल भावना हानि पहुंचाने के विचार का समूल उच्छेद् अर्थात् त्याग, परोपकार, करूणा की भावना का आविर्भाव।

सम्यक्र्मान्त– जीवनाश, चोरी, कामुकता, झूठ, अति भोजन, सामाजिक मनोरंजन में जाना, आभूषण, आरामदेह बिस्तर का उपयोग, स्वर्ण–रजतादि के प्रयोग से बचना आदि।

सम्यक् वाचा– मिथ्यावचन, निन्दा, अप्रिय एवं अनत्य वचन से दूर रहना, वाणी नियंत्राण।

ब्द्ध का व्यक्तित्वः

बुद्ध दर्शन की शिक्षाओं की सपफलता के लिए सर्वाधिक उपादेय इस धर्म का त्रिारत्न है – बुद्ध संघ और धर्म। इस धर्म में बुद्ध का व्यक्तित्व एक ऐसी धातु था जो संसार के लोगों को अनायास आकृष्ट करता था। बुद्ध का व्यक्तित्व सचमुच महान् अलौकिक और दिव्य था। उनके व्यक्तित्व की प्रतिभा के प्रकाश से पुराने पापियों का भी मनोमालिन्य दूर हो जाता था। अपूर्व त्याग बुद्ध के जीवन का महान् गुण था। राजघराने में पैदा होने पर भी इन्होंने अपने विशाल साम्राज्य को ठुकरा दिया। राज–प्रसादों के मखमली गद्दों को छोड़कर इन्होंने जंगल का कण्टकाकीर्ण जीवन स्वीकार किया। इन्होंने अपने शरीर को सुखाकर कांटा कर दिया परन्तु धन तथा सुख की कामना नहीं की। सचमुच, जब कपिलवस्तु का यह राजकुमार अपनी युवावस्था में ही राज्य, गृह और गृहिणी से नाता तोड़ और विरक्ति तथा तपस्या से संबंध जोड़कर अपना भिक्षापात्रा लिए, संसार को विश्व शांति का उपदेश देता हुआ घूमता होगा, उस समय का वह दृश्य देवताओं के लिए भी दर्शनीय होता होगा। त्याग और तपस्या, दमन और शमन, शांति और अहिंसा का एकत्रा संयोग वास्तव में बुद्ध के व्यक्तित्व को छोड़कर अन्यत्रा मिलना कठिन है। बुद्ध के चरित्रा का दूसरा गुण उनका आत्म–संयम था। इन्होंने गृह त्याग दिया था, पत्नी का त्याग किया था और शेष जीवन को आत्मदमन और संयम में बिताया। जब वे तपस्या कर रहे थे, उस समय मार ने अनेक अप्सराओं और परम सुंदर युवतियों को लेकर उन पर आक्रमण किया परंतु उनके विगतराग हृदय में, कामवासना से रहित मानस में तनिक भी विकार नहीं पैदा हुआ और दृढ़ प्रतिज्ञ होकर अपने आसन से वे तनिक भी नहीं डिगे। यह भी उनकी इंद्रिय निग्रह या आत्म संयम की परीक्षा थी और बुद्ध इसमें पूर्णतया सपफल हुए। इस प्रकार उनका चरित्रा अत्यन्त उज्जवल, पवित्रा तथा अनुकरणीय था। तथागत के चरित्रा की तीसरी विशेषता परोपकार वृत्ति थी। बुद्ध का हृदय मानव प्रेम से पूर्णतः भरा हुआ था। मनुष्यों के नाना प्रकार के दुःखों को देखकर उनका हृदय टूक–टूक हो जाता था। वे दूसरों के दुःखों से स्वयं दुःखी रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने मानव दुःखों का नाश करना अपने जीवन का परम लक्ष्य बनाया। मनुष्यों के दुःखों को दूर करने की औषधि पाने के लिए ही वे अनेक वर्षों तक जंगल में भटकते रहे और अंत में उसे प्राप्त कर ही विश्राम लिया। उन्होंने चार आर्य सत्यों तथा अष्टांगिक मार्गों का अनुसंधान कर मनुष्यों के क्लेश निवारण का उपाय बताया। उन्होंने घर छोड़ा, घरिनि छोड़ी, राज्य छोड़ा और सुख छोड़ा परंतु क्या प्राप्त किया?–मानव दुखों को दूर करने का परमौषध। मध्यकालीन युग में बुद्ध का व्यक्तित्व लोगों को आकर्षित करता था। मार्कोपोलो ने लिखा है–फ्यदि वे ; बुद्ध ईसाई होते तो वे क्राइस्ट धर्म के बहुत बड़े संतों में से एक होते। उनके तथा क्राइस्ट के चरित्रा तथा शिक्षा में बहुत कुछ समानता है।सुप्रसि(विद्वान बार्थ ने लिखा है– बुद्ध का व्यक्तित्व शांति और माधुर्य कासंपूण्ज्ञ आदर्श है। वह अत्यन्त कोमलता, नैतिक स्वतंत्राता और पाप–रहित मूर्ति है।

www.ignited.in

बुद्धवाद

यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से विचार करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि बुद्ध धर्म की सबसे बड़ी विशेषता उसका बुद्धवाद है। यद्यपि यह कहना अनुचित होगा कि बुद्ध के पहले धर्म में बुद्धवाद को स्थान नहीं था, पिफर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि गौतम बुद्ध ने बुद्धवाद को जितना महत्व प्रदान किया उतना किसी ने नहीं किया था। गौतम बुद्ध के पहले वैदिक धर्म का बोलबाला था। वेद का प्रमाण अखण्डनीय समझा जाता था। वेद की प्रमाणिकता में संदेह करना अधर्म गिना जाता था। पधर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः यह महामंत्रा उद्घोषित किया जाता था। धर्म के संबंध में श्रुति ही परम प्रमाण मानी जाती थी और श्रुति से इतर वस्तु प्रमाण कोटि में नही जाती थी। यद्यपि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में बुद्ध शरणमन्विच्छय कहकर बुद्धवाद की महत्ता को स्वीकार किया है, पिफर भी अंत में उन्होंने धार्मिक मामलों में शास्त्रा को ही प्रमाण माना है। धर्म, अधर्म की उलझन में पड़े हुए मनुष्यों को उन्होंने फ्तस्मात् शास्त्रां प्रमाणं ते कार्या कार्यव्ययस्थितोय का उपदेश दिया है।

संभवतः संसार के इतिहास में इस प्रकार का धार्मिक उपदेश शायद ही कहीं सुनने को मिले, परन्तु तथागत के रूप में हम एक ऐसे विलक्षण धर्मोपदेशक को पाते हैं जिसने न केवल शास्त्राों की सत्ता को अस्वीकृत किया, बल्कि अपना गुरुद्ध प्रमाण्य भी न मानने के लिए शिष्यों को पूरी स्वतंत्राता दे दी। इस प्रकार गौतम बुद्ध ने मनुष्य की महत्ता तथा उसकी पवित्राता को स्वीकार किया।

उस प्राचीन काल में जब व्यक्तिगत विचार का विशेष मूल्य नहीं था तथा शास्त्राों की प्रमाणिकता के आगे तर्क को स्थान नहीं दिया जाता था, बुद्ध ने बुद्धिवाद की प्रतिष्ठा कर सचमुच ही बहुत बड़ा काम किया। लोग यह समझने लगे कि इस धर्म को मानना चाहिए इसलिए आवश्यक नहीं है कि यह किसी राजकुमार या तपस्वी के द्वारा चलाया गया है, बल्कि इसलिए कि अपनी बुद्ध को यह उचित प्रतीत होता है इस प्रकार अनेक लोगों ने–जिन्हें यह पसंद आया, इस धर्म को स्वीकार कर लिया। यही कारण है कि आजकल भी यह धर्म अपने बुद्धवाद के कारण लोगों को अधिक 'अपील' करता है।

वर्तमान में बौद्ध दर्शन की प्रासांगिकताः

आज संपूर्ण विश्व चतुर्दिक हिंसा एवं साम्प्रदायिक दंगों की विभिषिका में घिर कर विश्व–युद्ध के कगार पर खड़ा हुआ है। अशांति एवं स्वार्थ के चरमोत्कर्ष का ही परिणाम है कि व्यक्ति संत्रास्त, कष्टग्रस्त एवं दुःखी है। संदेह एवं अविश्वास ने संपूर्ण वातावरण को विषम बना डाला है मनुष्य ही मानवता का भक्षक बना हुआ है। धर्म के नाम पर पाखण्ड एवं दिखावा कर्म के नाम पर हिंसा, छल, कपट, धोखा, बेइमानी प्रत्यक्षतः दृष्टिगत होता है। मर्यादाओं का परित्याग कर स्वच्छन्दता एवं उद्दण्डता को अपनाकर असहिष्णु बन गया है। जो संघर्ष की स्थिति को स्वयमेय जन्म देती है, परिणामस्वरूप मनुष्य के मन में स्वार्थ, ईर्ष्या, चोरी, झूठ, हिंसा ने स्थान बना लिया है। जिन संस्कारों एवं मर्यादाओं के पालन से आदर्शों की परिधि एवं मानवता की ब्रधि होती थी, वही मानवता, वर्तमान में स्वार्थ लोलुपता एवं संस्कारहीनता के अंधकूप में अत्यधिक गहराई तक पतनोन्मुख होती जा रही है। देश, धर्म एवं सम्प्रदाय के नाम पर विभक्त हो रहा है। धर्म का स्वरूप विकृत होकर व्यावहारिक रूप में मात्रा पाखण्ड बनकर अपना अर्थ, स्वरूप एवं व्यापकता खोकर संकीर्ण हो चुका है। असत्य, चोरी एवं लिप्सा की बढ़ती घृणास्पद प्रवृत्ति से संघर्ष हेतु हमें अपनी प्राचीन परंपराओं का ही अनुगमन करना पड़ेगा। आज के भारतीय जीवन दर्शन में मानव के अस्तित्व की लड़ाई को जीतने के लिए समस्त तथ्यों की आवश्यकता है, जो भारतीय दर्शन के मूल में हैं एवं लोक मगल की भावना से ओत–प्रोत है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य मं बौद्ध दर्शन की उपादेयताः

वर्तमान के ज्वलंत समस्याओं से जूझती रूग्ण मानवता के लिए बुद्ध के उपदेशों की महत्ती आवश्यकता है जोकि अनिश्चितता के भंवर में फंसी प्राणी मात्रा की रक्षा कर सके। इनका प्रमुख उद्देश्य था–अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य एवं मद्यनिषेध। वर्तमान परिवेश में सर्वाधिक प्रासंगिक है, ये पंचशील एवं इनमें भी प्रमुख हैं अहिंसा धर्म का पालन। विश्व में अहिंसा से बड़ा कोई धर्म नहीं है। अहिंसा का तात्पर्य है–प्राणी मात्रा के प्रति जिसमें वनस्पति एवं समस्त जीवधारी भी हैं की हिंसा न करना, न दुःख पहुंचाना वं न ही कोई ऐसा कार्य करना जोकि अपने मन, वचन एवं कर्म के प्रतिकूल हो।

इस प्रकार हमारा भावनात्मक लगाव संपूर्ण विश्व के साथ हो जाएगा। अपने अधीन श्रमिक का शोषण न होने दें, उसकी रोजी–रोटी में बाधक न बनें, विश्वासघात न करें, ठगी, लूटपाट, डकैती न करें, रिश्वत न लें, झूठ एवं वचन के माध्यम से स्वार्थ सिद्धि न करें, आवश्यकता से अधिक का संग्रह कर किसी की आवश्यक आवश्यकता पूर्ति में बाधक न बनें।

निन्दनीय कर्मों का परिहार करते हुए असत्य, पिशुन वचन, बहुवचन एवं व्यर्थ के प्रलाप का परित्याग करें। इंद्रियों पर संयम रखते हुए व्यभिचारादि से बचें। बुद्ध की दृष्टि में कोई भी अछूत नहीं था। वे समाज में ऊंच–नीच के भेदभाव के कट्टर विरोधी थे। उनकी मान्यता थी कि कोई व्यक्ति ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से ब्राह्मण नहीं होता न ही अब्राह्मण घर में जन्म लेने पर अब्राह्मण ही होता है। कर्मों से ही कोई ब्राह्मण तो कोई अब्राह्मण होता है। जन्म से नहीं। वे जन्मना ब्राह्मणत्व की अपेक्षा कर्मणा ब्राह्मणत्व को महत्वपूर्ण मानते हैं। यद्यपि बुद्ध के उपदेशों का अक्षरशः पालन आज के परिवेश में संभव नहीं है, क्योंकि गृहस्थ जीवन यापन करते हुए समस्त यम–नियमों का अविकल रूप से पालन संभव नहीं है। तथापि यदि आंशिक अनुकरण भी कर सके तो उन पाप कर्मों एवं साम्प्रदायिक भावना से मुक्त हो सकते हैं जिसने आज मानवता का मस्तक लज्जावनत कर दिया है। साथ ही उन मृतप्राय भावनाओं का जोकि आज के परिप्रेक्ष्य में मृतप्राय हो चुकी हैं जागृत कर अन्तरात्मा की अन्तः ध्वनि को सुन एवं क्रियान्वित रूप देकर समाज का कल्याण कर सकते हैं। गौतम बुद्ध ने भी दो अतियों का सेवन हेय माना था–भोग–विलास पूर्ण जीवन एवं शरीर को व्यर्थ मे कष्ट देकर भयंकर तप साधना सिद्धि हेतु प्रयास। संयम एवं सदाचारमय जीवन ही बुद्ध के धर्म का सार है, जिनकी आज संपूर्ण मानवता को अत्यधिक आवश्यकता है।

उपसंहारः–

शिक्षा का दर्शन एवं धर्म से घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारतीय शिक्षा प्राचीन काल से ही दार्शनिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों से जुड़ी रही है। संसार की परिस्थितियों में परिवर्तन के फलस्वरूप दार्शनिक विचारधाराओं में परिवर्तन होता रहता है और तद्नुसार शिक्षा व्यवस्था भी परिवर्तित होती रहती है। सत्य तो यह है कि दर्शन का व्यावहारिक रूप शिक्षा है और शिक्षा का सैद्धान्तिक रूप दर्शन। वह दर्शन, दर्शन नहीं है जिसका शिक्षा पर प्रभाव न हो और वह शिक्षा, शिक्षा नहीं है, जिसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि न हो। वास्तविक दर्शन वह है जिसमें युवकों को जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण को अपनाने हेतु प्रेरित करने और सम्पूर्ण समाज को शिक्षा के उचित विचारों को ग्रहण कराने की शक्ति होती है।

बौद्ध दर्शन आजकल संसार के महनीय दर्शनों में मुख्य है। ईसाई मतावलंबियों की संख्या अधिक बतलाई जाती है, परन्तु उनमें इतनी पारस्परिक विभिन्नता है कि सबको एक ही धर्म के अंतर्गत मानना न्यायसंगत नहीं है। परन्तु बौद्धधर्म में ऐसी बात नहीं है। यह एक ऐसा धर्म है जिसने हिन्दू धर्म को ध्वस्त कर देने में सपफलता प्राप्त की और लगभग दो सौ वर्षों तक भारत का राजकीय धर्म बना रहा। ईसाई तथा इस्लाम धर्म जैसे प्रचारक धर्मों ने भी संसार में इतनी शीघ्र सपफलता नहीं पायी जितनी बौद्ध धर्म को मिली। बौद्ध ने मनुष्यों की इच्छापूर्ति के लिए अपने धर्म का प्रचार नहीं किया। उन्होंने न तो स्वर्ग का दरवाजा ही जनता के लिए मुपफ्त में खोला और न ही मोक्ष प्राप्ति का लोभ ही जनता को दिया। बौद्धधर्म का त्रिारत्न (1) बौद्ध (2) संघ तथा (3) धर्म था। बौद्ध का व्यक्तित्व एक ऐसी वस्तु थी जिसने संसार के लोगों को अनायास ही आकृष्ट किया। बौद्ध का व्यक्तित्व सचमुच महान्, अलौकिक और दिव्य था। अपूर्व त्याग बौद्ध के जीवन का महान् गुण था।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

अनुवाद डब्ल्यू. गायगर तथा एम.एच. बोस, लन्दन 1912 विनय पिटक : सम्पादित एच. ओल्डेनवर्ग, पालि टेक्स्ट सोसायटी, लन्दन 1879–93, अंग्रेजी अनुवाद विनय टेक्स्ट, टी.डब्ल्यू. रीज डेविड्स और एच. ओल्डेनवर्ग, सेक्रेड कुक्स ऑपफ दी ईस्ट, (जिल्द 13,17,20) भारतीय संस्करण दिल्ली 1965

समन्त वासादिका : विनयपिटक की टीका, बौद्धघोष, जे. ताकाकुसु और एस. नागी द्वारा सम्पादित, पालि टेक्स्ट, लन्दन, 1924–47

सुत्त निपात : सम्पादक, डी. एण्डरसन और एस. स्मिथ, पालि टेक्स्ट सोसायटी, लन्दन 1913, नालंदा देवनागरी संस्करण, 1958, अंग्रेजी अनुवाद, बी. पफॉसबॉल, सेक्रेड कुक्स ऑपफ दी ईस्ट, भारतीय संस्करण 1965, इ.एम. हेयर, सेक्रेड बुक्स ऑपफ दी बौद्धिस्टस, लन्दन 1945

संयुक्त निकाय : सम्पादक, लिमोन ि्यर और श्रीमती रीज डेविड्स, पालि टेक्स्ट सोसायटी, लन्दन 884–1904, सम्पादित, भिक्षु जगदीश कश्यप, नालंदा देवनागरी संस्करण, 1957, हिन्दी अनुवाद भिक्षु जगदीश कश्यप, (दो जिल्दों में) महाबोधि, सारनाथ, 1954

उपासक, चन्द्रिका सिंह : डिक्शनरी ऑपफ अर्ली बौद्धिस्ट मोनोस्टिकटर्क्स, वाराणसी 1975

कोसम्बी, दामोदर धर्मानन्द : दी कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑपफ ऐंश्येन्ट इण्डिया, इन हिस्टारिकल आउट लाइन, भारतीय संस्करण, दिल्ली 1975

अंगुत्तर निकाय : सम्पादिक भिक्षु जगदीश कश्यप, नालंदा देवनागरी, संस्करण 1958, सम्पादिक रिचर्ड मोरिस और एण्डमण्ड हार्डी, पालि टेक्स्ट सोसायटी लन्दन, 1885–1900

कथावस्तु : सम्पादिक भिक्षु जगदीश कश्यप, नालंदा, देवनागरी संस्करण 1961

जातक : सम्पादिक, पफाउसबोल्ल, ट्रबनर एण्ड कं.लि., लंदन, 1877–96

चुल्लवग्ग : सम्पादिक भिक्षु जगदीश कश्यप, नालंदा देवनागरी संस्करण, 1956

Corresponding Author

Karuna Kumari*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

E-Mail – chintuman2004@gmail.com